नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

आतंकवाद के खिलाफ कठोर कार्रवाई जरूरी

जम्मू-कश्मीर के कुलगाम में मजदूरों पर हुआ नृशंस आतंकी हमला केवल दो निर्दोष भारतीय नागरिकों की हत्या भर नहीं है, बल्कि यह भारत की आंतरिक शांति, सामाजिक सौहार्द और राष्ट्रीय सुरक्षा को चुनौती देने का एक सुनियोजित प्रयास है. जिस प्रकार आतंकियों ने पहले नाम और धर्म पूछा, फिर पानी मांगा और उसके बाद गोलियां बरसा दीं, उससे स्पष्ट है कि उनका उद्देश्य केवल हत्या करना नहीं, बल्कि समाज में भय, अविश्वास और सांप्रदायिक तनाव फैलाना था. यह हमला पहलगाम जैसी आतंकी वारदात की पुनरावृत्ति है, जो बताता है कि आतंकवाद का चेहरा आज भी उतना ही क्रूर और अमानवीय है.

प्रारंभिक जांच में जिस प्रकार लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े आतंकी लतीफ बट का नाम सामने आया है, उससे यह भी स्पष्ट होता है कि सीमा पार बैठे आतंकी आकाओं के इशारे पर यह साजिश रची गई. ऐसे हमले किसी एक व्यक्ति या संगठन की सनक नहीं होते, बल्कि पाकिस्तान की धरती और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में सक्रिय आतंकी ढांचे की सोची-समझी रणनीति का हिस्सा होते हैं. भारत लंबे समय से अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इस सच को उजागर करता आया है कि आतंकवाद को संरक्षण और संसाधन उपलब्ध कराने वाले तंत्र को समाप्त किए बिना स्थायी शांति संभव नहीं है.

इस हमले का समय भी कई सवाल खड़े करता है. पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में पिछले कुछ समय से जनता का असंतोष खुलकर सामने आ रहा है. वहां आर्थिक बदहाली, प्रशासनिक विफलता और राजनीतिक दमन के विरुद्ध विरोध-प्रदर्शन तेज हुए हैं. ऐसे माहौल में सीमा पार से भारत में आतंकी घटनाओं को अंजाम देकर पाकिस्तान की सत्ता और वहां सक्रिय आतंकी संगठन दुनिया का ध्यान पीओके के संकट से हटाने का प्रयास कर सकते हैं. हालांकि किसी एक घटना के पीछे अंतिम निष्कर्ष जांच के बाद ही निकाले जा सकते हैं, लेकिन इतना स्पष्ट है कि आतंकवाद का इस्तेमाल अक्सर राजनीतिक और रणनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता रहा है.

ऐसे समय में भारत को केवल निंदा तक सीमित नहीं रहना चाहिए. सुरक्षा एजेंसियों को आतंकियों के पूरे नेटवर्क, उनके स्थानीय सहयोगियों और वित्तीय स्रोतों पर निर्णायक प्रहार करना होगा. सीमा पर निगरानी और घुसपैठ रोकने के उपायों को और अधिक सशक्त बनाने के साथ-साथ खुफिया तंत्र के समन्वय को भी मजबूत करना होगा. आतंकवाद के प्रति किसी भी स्तर पर नरमी या शिथिलता का संदेश नहीं जाना चाहिए. जो भी व्यक्ति आतंकियों को शरण, सहायता या सूचना उपलब्ध कराता है, उसके विरुद्ध भी कठोरतम कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित होनी चाहिए. साथ ही, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत को पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के मुद्दे को और अधिक प्रभावी ढंग से उठाना चाहिए. दुनिया को यह समझना होगा कि आतंकवाद किसी एक देश की नहीं, बल्कि पूरी मानवता की समस्या है. यदि आतंकवाद के संरक्षकों पर समय रहते दबाव नहीं बनाया गया, तो उसका दुष्परिणाम वैश्विक शांति को भी भुगतना पड़ेगा.

निर्दोष नागरिकों का रक्त किसी भी सभ्य समाज के लिए अस्वीकार्य है. कुलगाम की यह घटना यह याद दिलाती है कि आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ है. सरकार को ऐसी हर साजिश का जवाब केवल शब्दों से नहीं, बल्कि कठोर, त्वरित और निर्णायक कार्रवाई से देना होगा, ताकि आतंक के आकाओं और उनके संरक्षकों दोनों को यह संदेश मिल जाए कि भारत अपने नागरिकों की सुरक्षा के प्रश्न पर किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करेगा.

जेन जी राजनीति

सिर्फ विकास नहीं, अवसर चाहिए

अनिल कुमार जायसवाल

> आज इन्हें जरूरत है एक करियर अनुभव अवसर की, जिससे प्रत्येक छात्र वर्ष में कम से कम एक बार कुछ दिन अपनी रुचि के अनुसार समय बिता सके. यदि किसी की रुचि फोटोग्राफी, संगीत, खेल, रोबोटिक्स, डिज़ाइन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कृषि नवाचार या अन्य क्षेत्र में है तो वह उस क्षेत्र के उत्कृष्ट संस्थान एवं विशेषज्ञ के साथ रहकर करीब से देख एवं समझ सके. ये कोई नया विचार नहीं है, ओईसीडी ने करियर गाइडेंस रिपोर्ट 2021 मे माना है की छत्रों को प्रारम्भिक अवस्था मे ही वास्तविक कार्यशाला और पेशेवरों से जोड़ने से उनकी करियर के निर्णय ज्यादा सटीक होते है. सरकार, जिस तरह छात्रों को छात्रवित्ति, शिक्षा ऋण, कौशल प्रशिक्षण एवं अन्य शैक्षणिक सहायता प्रदान करती हैं उसी तरह करियर अनुभव का भी अवसर उपलब्ध करा सकती है. आज जिस तरह जैन जी की अवसर की माँग बढ़ रही है आने वाले वर्षों में भारतीय राजनीति की लड़ाई विचारों कि नहीं, अवसरों की हो सकती है . जो राजनीतिक दल युवाओं को बेहतर अवसर देगा वही उनका विश्वास जीतेगा. शायद उस दिन भारतीय राजनीति का चुनावी मुद्दा सिर्फ विकास नहीं अवसर होगा.

ये समय है भारत की राजनीति में उभरती अवसर की राजनीति को समझने का युवाओं को क्या चाहिए? इस सवाल पर आज लगभग हर राजनीतिक दल का जवाब होगा, शिक्षा, रोजगार, और बेहतर भविष्य. लेकिन 20 वर्षीय छात्र से यही सवाल पूछा जाए तो उसका जवाब शायद अलग होगा, यह कि इतना अवसर मिले ताकि मैं अपना भविष्य अपनी मेहनत से बना सकूँ. यही वाक्य भारत की आगामी राजनीति को समझने की एक मजबूत कुंजी हो सकती है.

इस लेख में जेन जी का मतलब सिर्फ एक पीढ़ी नहीं, बल्कि 18 से 30 वर्ष आयु का राजनीतिक युवा है, जो पहली बार या शुरुआत के चुनाव में मतदान कर रहा है. भारत निर्वाचन आयोग के अनुसार 2024 लोकसभा चुनाव मे लगभग 1.8 करो? नए मतदाता जुड़े है. आगे की भारतीय राजनीति को समझने के लिए इस राजनीतिक युवा को समझना ज़रूरी है. भारतीय राजनीति में आज लगभग सभी दल युवाओं तक पहुँचने का प्रयास कर रहे हैं. भाजपा राष्ट्रवाद, विकसित भारत, मजबूत नेतृत्व, डिजिटल इंडिया एवं स्टार्टअप की बात करती है. पिछले एक दशक में मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया और पीएम मुद्रा योजना जैसे पहल इस दिशा का हिस्सा रहे हैं. तो वही कांग्रेस संविधान, आर्थिक समानता, सामाजिक न्याय, शिक्षा और रोजगार पर ज्यादा जोर देती है. हाल ही चुनावों में संविधान, सामाजिक सुरक्षा आर रोजगार उनके प्रमुख मुद्दे रहे हैं. लेकिन आज का राजनीतिक युवा इनसे सवाल पूछता है कि उसे कितने अवसर मिलेंगे? उसके वास्तविक जीवन में क्या बदलाव आएगा? लोकनीति-सीएसडीएस के चुनावी अध्ययनों मे भी युवाओ की आर्थिक सुरक्षा मुख्य प्राथमिकताओ में रहा है.

पिछले दशकों में, अधिकारों की राजनीति फिर विकास की राजनीति, अब भारत की राजनीति में सबसे बड़ा परिवर्तन हो रहा है जिसे अवसर की राजनीति कहा जा सकता है. इसका मतलब विकास का विरोध नहीं, बल्कि विकास के साथ अवसरो की अपेक्षा है . इस परिवर्तन को समझने के लिए किसी कठिन राजनीतिक सिद्धांत की जरूरत नहीं, बल्कि एक किसान के उदाहरण से समझा जा सकता है. जिस तरह किसान सरकार से पूरी खेती का जिम्मा उठाने की माँग नहीं करता है, वह चाहता है कि समय पर खाद, अच्छी बीज, सिंचाई की सुविधा एवं फसल का उचित मूल्य मिले, बाकी अपनी मेहनत से अपनी किस्मत लिखता है. ठीक इसी तरह राजनीतिक युवा भी, सरकार से सफलता नहीं माँगता, बल्कि माँगता है तो निष्पक्ष अवसर, पारदर्शी व्यवस्था, अच्छी शिक्षा और अपनी प्रतिभा साबित करने का मंच, बाक़ी अपनी मेहनत से सफलता खुद हासिल करना चाहता है .

यही कारण है कि जेन जी की राजनीति अलग है, वह आज सरकार के अच्छे कामों का समर्थन करती है तो, कल उसी सरकार के गलत नीतियों का विरोध करने में पीछे नहीं हटती. इसे किसी राजनीतिक अस्थिरता का नहीं बल्कि प्रदर्शन आधारित लोकतंत्र का संकेत कहा जा सकता है. हलाँकि भारत की राजनीति मे जहां जाति, स्थानीय नेतृत्व और क्षेत्रीय मुद्दे अभी भी प्रभावशाली है लेकिन लोकनीति-सीएसडीएस के अध्ययनो से संकेत मिलते है की शासन का प्रदर्शन पहले से ज्यादा महत्वपूर्ण हो रहा है. राजनीतिक युवा केवल वादों पर विश्वास नहीं करती बल्कि पूछती है योजना का रोडमैप, समय-सीमा, वित्तीय स्पष्टता, जिम्मेदारी एवं जवाबदेही. हाल ही में हिंदी भाषी क्षेत्रों (मुख्यत: मध्य प्रदेश एवं आस-पास के क्षेत्रों) में युवाओं और विद्यार्थियों से बात-चीत से दो बाते लगातार सामने आईं. पहला निष्कर्ष है, कि कोरोना महामारी के बाद छोटे कस्बों एवं गांवों में लाइब्रेरी का चलन तेजी से बड़ा है. लगभग हर क्षेत्र में एक सार्वजनिक लाइब्रेरी की मांग बढ़ी है. ये माँग सिर्फ़ एक भवन कि नहीं बल्कि उस वातावरण की है जहाँ भविष्य के सपनों को तैयार करने का अवसर मिल सके. राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी लाइब्रेरी और सेल्फ लर्निंग की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण हिस्सा मानती है.

(लेखक आईआईटी पटना ग्रेजुएट, चुनाव शोधकर्ता और रणनीतिकार)

मालवा- निमाड़ की डायरी

चिटनिस-दादू के मंत्री बनने की आस

संजय व्यास

दतिया उपचुनाव से फुरसत के बाद मध्यप्रदेश मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर एक बार फिर चर्चाएं जोरो पर हैं. बुरहानपुर और नेपानगर विधायक ने अपना रुख लॉबिंग की ओर कर लिया है. बुरहानपुर विधायक, प्रदेश भाजपा प्रवक्ता, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य, पूर्व कैबिनेट मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनिस को दतिया चुनाव में प्रचार की महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करने से उनके पुन: मंत्री मंडल में शामिल होने की संभावनाएं बढ़ गई हैं. चिटनिस ने 2003 से 2018 तक विधान सभा जीतकर यहां हैट्रिक लगाई थी और हर बार मंत्री मंडल में जगह बनाई. 2018 के चुनाव में उन्हें निर्दलीय सुरेंद्र सिंह शेरा के सामने मात मिली थी.

2023 में चिटनिस ने पुन: विधान सभा में वापसी की, लेकिन मोहन यादव के प्रारंभिक मंत्री मंडल में आशा के बावजूद स्थान नहीं मिला. अब मंत्री मंडल विस्तार की चर्चाओं के बीच फिर क्षेत्रवासियों को उनके मंत्री बनने की आस बलबती हुई है. वहीं नेपानगर विधायक मंजू दादू का भी भोपाल और दिल्ली दौरा चर्चाओं में है. दूसरी बार विधायक बनीं मंजू के पास अपने पिता राजेंद्र दादू के पार्टी में योगदान का सहारा है और अनुसूचित वर्ग से आने के कारण व दूसरी बार विधायक चुने जाने को लेकर समर्थक उनके मंत्री मंडल में शामिल किए जाने की उम्मीद लगाए बैठे हैं. फिलहाल चिटनिस -दादू जनता के बीच विकास को लेकर सक्रिय हैं. दोनों अपने-अपने क्षेत्रों में विकास के लिए योजनाएं लाने को जुटी हैं. सरकार द्वारा विकास को लेकर करोड़ों की सौगाते निरंतर जारी होने से दोनों के बीच प्रतिस्पर्धा दिखाई दे रही है.

पूर्व नप अध्यक्ष के मंसूबे धरे रह गए

निकाय चुनाव लडने की तैयारी कर रहे नीमच जिले की रामपुरा नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष यशवंत करेल पर अयोग्यता की गाज गिर गई. उन्हें निर्माण कार्यो में वित्तीय अनियमितता का दोषी पाया गया था. अतिरिक्त कक्ष निर्माण तथा शासकीय चिकित्सालय के आवासीय भवन निर्माण कार्यों में निविदा प्रक्रिया एवं न्यूनतम दरों की स्वीकृति में गंभीर अनियमितताओं के मामले में लोकायुक्त जांच में संबंधित अधिकारियों की रिपोर्ट एवं उपलब्ध दस्तावेजों के आधार पर उनकी भूमिका को उत्तरदायी माना गया. इसके बाद प्रदेश शासन के नगरीय विकास एवं आवास विभाग ने 5 वर्ष की अवधि के लिए किसी भी स्थानीय निकाय का चुनाव लडने से अयोग्य घोषित कर दिया. जांच में दोषी पाए जाने के बाद करेल न्यायालय की शरण में पहुंचे थे, पर उन्हें उस दर से भी बिना राहत खाली हाथ लौटना पड़ा और उनके आगामी चुनाव लडने के मंसूबे पर पानी फिर गया.

अपनी जमीन तैयार कर रहे गुर्जर

किसान नेता मंदसौर कांग्रेस जिलाध्यक्ष महेंद्र सिंह गुर्जर विधान सभा चुनाव के लिए अपनी जमीन तैयार करने की मशक्कत कर रहे हैं. वे 2 बार कांग्रेस से विधान सभा चुनाव लड़ चुके हैं, पर सफलता नहीं मिली. इस बार वे अभी से मेहनत कर रहे हैं. जिले में मतदाताओं का रुख कांग्रेस की ओर मोडने के लिए उनके सामने 2027 के निकाय-पंचायत चुनाव हैं. जिले में बूथ एवं पंचायत स्तर तक संगठन का शत-प्रतिशत गठन पूर्ण होने के बाद अब गुर्जर का लक्ष्य संगठन के विस्तार के साथ-साथ एकता, समन्वय, अनुशासन और सक्रियता बढ़ाना है. इसी दिशा में उनका बैठकों का दौर चल रहा है. जहां जा रहे हैं वे कार्यकर्ताओं से आगामी नगरीय निकाय एवं पंचायत चुनावों की तैयारियों में अभी से जुटने का आह्वान करते नजर आ जाते हैं. वे विधान सभा चुनाव से पहले पंचायत चुनाव के जरिए कांग्रेस को एकजुटता के साथ मजबूत स्थिति में लाने का ध्येय लेकर आगे बढ़ रहे हैं.

पर्यावरण की अनदेखी महंगी पड़ेगी

सर्वोच्च न्यायालय का यह यह निर्णय निर्णय विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए. आवश्यकता इस बात की है कि पर्यावरणीय नियमों का पालन केवल कागजों तक सीमित न रहे, बल्कि उन्हें पूरी गंभीरता से लागू किया जाए.

देश में विकास की रफ्तार तेज करने की होड़ के बीच पर्यावरण संरक्षण का सवाल अक्सर पीछे छूट जाता है. यही कारण है कि विकास परियोजनाओं को मंजूरी देने की प्रक्रिया में पर्यावरणीय चिंताओं को कई बार अपेक्षित महत्व नहीं मिल पाता. परिणाम यह होता है कि जब किसी परियोजना के दुष्प्रभाव सामने आते हैं, तब नुकसान की भरपाई के उपाय तलाशे जाते हैं, जबकि तब तक काफी देर हो चुकी होती है. हाल में सर्वोच्च न्यायालय ने इस प्रवृत्ति पर महत्वपूर्ण टिप्पणी करते हुए स्पष्ट किया है कि किसी परियोजना के शुरू हो जाने या पूरा होने के बाद पर्यावरणीय मंजूरी देना उचित व्यवस्था नहीं मानी जा सकती. अदालत ने 2021 के उस सरकारी आदेश को निरस्त कर दिया, जिसके तहत परियोजनाओं को बाद में भी पर्यावरणीय मंजूरी देने का प्रावधान किया गया था. अदालत का मानना है कि ऐसी व्यवस्था पर्यावरण संरक्षण की मूल भावना के विपरीत है और इससे पर्यावरणीय नियमों का पालन कमजोर पड़ता है. निस्संदेह, विकास किसी भी देश की आवश्यकता है, लेकिन विकास और पर्यावरण को एक-दूसरे का विरोधी नहीं माना जा सकता. यदि विकास की कीमत प्राकृतिक संसाधनों, स्थानीय पारिस्थितिकी और लोगों के जीवन पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव के रूप में चुकानी पड़े तोउसकी उपयोगिता पर सवाल उठना स्वाभाविक है. यही कारण है कि पर्यावरणीय मंजूरी की प्रक्रिया का उद्देश्य केवल औपचारिकता निभाना नहीं, बल्कि संभावित नुकसान का पहले से आकलन करना है. यह भी ध्यान रखना होगा कि पर्यावरण को हुई क्षति की भरपाई हमेशा संभव नहीं होती. जंगलों का विनाश, जैव विविधता का और स्थानीय पारिस्थितिकी पर पड़ने वाले प्रभाव कई बार स्थायी हो जाते हैं. ऐसे में परियोजनाओं को पहले मंजूरी और बाद में समीक्षा की व्यवस्था पर्यावरण संरक्षण की भावना को कमजोर करती है.

- केसरी नंदन

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

सरकार को शांति की चाहत तो विपक्ष मुक्त हो भारत

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, संसद के दोनों सदनों में विपक्ष बहुत शोरशराबा और हंगामा करता है. प्रधानमंत्री और गृहमंत्री पर तीखे शब्दबाण छोड़े जाते हैं. ऐसी हालत में शांति कैसे लाई जाए?'

हमने कहा, 'यदि पीसफुल वातावरण चाहिए तो अगले चुनाव में उम्मीदवारों का चयन करते समय शांतिलाल और शांतिबाई जैसे नामवालों को टिकट देनी चाहिए. गूंगे-बहरों को भी प्रत्याशी बनाया जा सकता है. महात्मा गांधी ने 3 बंदरों के माध्यम से संदेश दिया था- बुरा मत बोलो, बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो! विपक्ष को इससे सीख लेनी चाहिए. उसके नेता सरकार की बुराई देखने, सुनने से बचें और उसके खिलाफ बुरा भी न बोलें. सरकार को पूरी तरह मनमानी करने दें. उसकी अनदेखी करें, इससे सदन में स्मशान जैसी शांति बनी रहेगी.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, शायद इसी वजह से बीजेपी नेता विपक्ष मुक्त भारत की बात करते हैं. न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी ! चीन, उत्तर कोरिया और रूस में

विपक्ष नहीं है इसलिए कोई भी फैसला निर्विवाद और निर्विरोध लिया जाता है और तत्काल लागू कर दिया जाता है. वहां कोई चिल्ल-पों नहीं होती. अपने यहां विपक्ष सरकार पर पूंजीपतियों से सांठगांठ का आरोप लगाता है, पेपर लीक, चंदा चोरी, महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार के मुद्दे उठाकर हल्ला-गुल्ला 10 करता है. सत्तारुढ़ नेता को भगवान मानकर सम्मान नहीं करता. इस विपक्ष में संघ की शाखा का अनुशासन और संस्कार नहीं हैं. विपक्ष के कुछ नेता अपने भड़काऊ भाषणों से सत्तापक्ष के कान में पिघला हुआ सीसा डाल देते हैं. आखिर यह कब तक चलेगा?'

हमने कहा, 'इस समस्या से निपटने के प्रयास हो रहे हैं? चुनाव आयोग, एसआईआर की भरपूर कोशिशों से ऐसे लाखों मतदाताओं का सफाया हो रहा है, जो बीजेपी या एनडीए को वोट नहीं देते. सीजेआई ने भी कुछ युवा वकीलों व बेरोजगार युवाओं को 'कॉकरोच' कह दिया था. उनकी इस कमेंट का असर यह हुआ कि कॉकरोच जनता पार्टी बन गई. इधर बीजेपी है तो उधर सीजेपी जिसने जंतरमंतर पर बड़ा युवा आंदोलन कर डाला. ऐसे में शांति कैसे स्थापित होगी?'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, शोर हो तो भी क्या, सरकार का काम नहीं रुकता. विपक्ष के बहिर्गमन के बाद वह कोई भी बिल निर्विरोध पारित करा लेती है. इतना जरूर है कि दो-तिहाई बहुमत नहीं होने से परिसीमन बिल पास कराना सरकार के लिए टेढ़ी खीर है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12339 - डॉ. सागर खादीवाला

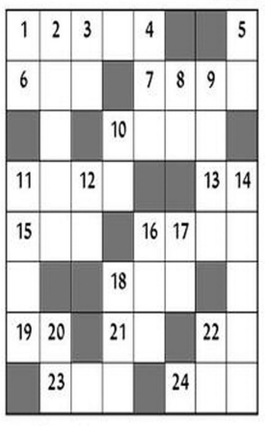

बाएं से दाएं
1. गांधीजी की दांडी-यात्रा यहीं से प्रारंभहुई थी 6. पति की बहन 7. वह जो किसी सभा का सदस्य हो 10. शाप देना, कोसना 11. जल में चलने वाला यान या सवारी, जहाज, नाव 13. शरीर, देह 15. किसी वस्तु के प्राप्त होने पर प्रमाण स्वरूप लिखा हुआ पत्र 16. परिश्रम 18. धीमा शब्द, उड़ती खबर 19. उम्मीद 21. पूर्णिमा की रात, चंद्रमा 22. तिरोहित, लोप, ध्वस्त 23. संबंध, वास्ता 24. रंगशाला में घटनाओं का प्रदर्शन

ऊपर से नीचे
1. वह पत्थर जिस पर औजारों की धार तेज की जाती है 2. एक पौधा जिसकी दांत (सं.) 4. जिसका प्रस्तुत विषय या विवाद से कोई संबंध न हो, गिनती या क्रम में तीन के स्थान पर पड़ने वाला 5. पत्तियां तुलसी के समान होती हैं 3. दंत, खोह, गुफा 8. वाष्प 9. अनादिकाल, बहुत दिनों से चली आई परंपरा, बहुत दिनों से चला हुआ 10. एक पौधा जिसके रेशे से रस्सियां आदि बनाई जाती हैं, जूट 11. जलने वाला, ईर्ष्या करने वाला 12. स्मरण करने की क्रिया 14. जिसका सिर झुका हुआ हो 16. स्वर्ग की एक अप्सरा जो शकुंतला की माता थी 17. अधिकार 18. भरने का भाव या काम, भरना 20. एक प्रकार की ऊनी चादर, दुशाला 22. शर्त, बंध

Solution 12338

अ	स	मा	न	ता		ला	ज
म	द	न		प	र	वा	ना
र				अ	श्क		धा
त्व	रि	त		व		ता	र
	या		स	रो	का	र	
पा	य	रू		ध	म	क	ना
ख	त	र	ना	क			दा
र		ल	व		र	ज	नी

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में पारिवारिक विवाद तथा मतभेदों में वृद्धि होगी. भावुकता व जल्दबाजी में लिये गये निर्णय हितकर रहेगा. स्वास्थ्य गड़गड़ रहेगा. वर्ष केमध्य में शुभ सूचना प्राप्त होगी. अध्ययन में रूचि एवं सहयोग बना रहेगा. वर्ष के अन्त में मांगलिक कार्यो में संलग्नता रहेगी. आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आर्थिक स्थिति का सामना करना पड़ेगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को स्वास्थ्य में सावधानी रखें. कर्क राशि के व्यक्तियों को मतभेद रहेंगे. सिंह राशि के व्यक्तियों को स्वास्थ्य लाभ होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अध्ययन में रूचि रहेगी. प्रियजनों का सहयोगप्राप्त होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को भावुकता व जल्दबाजी में निर्णय लेना हानिकारक रहेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियोंको मांगलिक कार्य में संलग्नता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक दुबला पतला लंबे कद का एकांतप्रिय लेखन और अध्ययन के क्षेत्र में रूचि रखेगा. नौकरी में उच्च पद पर पदस्थ होगा. माता का विशेष प्रेमी होगी. जन्म स्थान के निकट ही अपना भाग्योदय करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

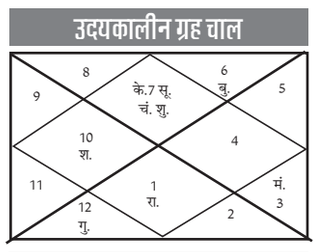

पंचांग

रा.मि. 13 संवत् 2083 श्रावण कृष्ण षष्ठी भौमवासरे रात 7/1, रेवती नक्षत्रे रात 8/5, धृति योगे शाम 6/46, गर करणे सू.उ. 5/26, सू.अ. 6/34, चन्द्रचार मीन रात 8/5 से मेष, शु.रा. 12,2,3,6,7,10 अ.रा. 1,4,5,8,9,11 शुभांक-5,7,1.

व्यापार भविष्य

श्रावण कृष्ण षष्ठी को रेवती नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड़, नमक, चांवल, के भाव में तेजी का रूख रहेगा. धनियां, जीरा, आदि के भाव में समता रहेगी. सोना चांदी में तेजी का रूख रहेगा. लोहा, के भाव में मंदी होगी. भाग्यांक 9455 है.

मेष- बुजुर्गों के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता हो सकती है. फैसला लेने में स्वयं को अक्षम पायेंगे. दूर दराज की यात्रा का योग है. वृषभन्तुकों के आने से प्रसन्नता रहेगी.

वृषभ- निजी कमजोरियों को दूर करने का प्रयास करें, सफ्लता मिलेगी. भूमि मकानादि कार्य में व्यस्त रहेगे. सम्मान मिलेगा. मांगलिक कार्यो में समय देना होगा.

मिथुन- उलझी बात सुलझाने से आप राहत महसूस करेंगे. कार्यक्षेत्र की योजनायें अटकेंगी अध्ययन अध्यापन में मन लगेगा. सुख साहस पराक्रम बढ़ेगा.

कर्क- स्वास्थ्य में चल रहा उतार परेशान कर सकता है. दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा. व्यापार व्यवसाय की प्रगति होगी. धार्मिक कार्यो में लगन रहेगी.

सिंह- प्रियजनों के साथ समय बिताकर खुशी होगी. भाग्योदय के अवसर मिलने से उत्साह बना रहेगा. विरोधियों से कड़े मुकाबले की संभावना है.

कन्या- आप कार्य के बोझ को कम करने की कोशिश करेंगे. कर्ज से छुटकारा पायेंगे. आवेश में आकर कोई भी ऐसा कार्य न करें, जो आपके हित में न हो.

तुला- अध्ययन व लेखन से लोगों को बड़ी सफ्लता मिल सकती है. भाग्यो'न्नति के प्रयासों में सफ्लता प्राप्त होगी. सामाजिक कार्य पूजा पाठ में मन लगेगा.

वृश्चिक- आप लोगों के साथ संबंध बढ़ाने का प्रयास करेंगे. कार्यक्षेत्र में बर्चस्व बढ़ेगा. शत्रु पर विजय प्राप्त होगी. मांगलिक कार्यो में खर्च होगा.

धनु- अपने गलत व भ्रामक विचारों को छोड़े, सफ्लता मिलेगी. शीघ्रता में कोई भी फैसला न लें. वाहन संबंधी बिक्री के कार्यो में उलझन हो सकती है.

मकर- जोखिम के कार्यो से दूर रहें. आपकी परेशानी बढ़ सकती है. परिश्रम तथा दौड़धूप की अधिकता रहेगी. अनपेक्षित वृषभन्तुकों के आने से खर्च में वृद्धि होगी.

कुम्भ- व्यर्थ विवादों में उलझने की बजाय कार्यो पर ध्यान दें. साझेदारी का लाभ होगा. साहसपूर्ण कामकाज बनने का योग है.

मीन- युवा उच्च अध्ययन अथवा प्रतियोगी परीक्षा में सफ्लता प्राप्त करेंगे. आर्थिक समस्याओं का समाधान होगा. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी.

SUDOKU 7471

	9				4			7
					7	9		
8								
4		5	8					
3				1				2
					9	7		6
								4
		3	5					
2			6				8	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7470

7	8	5	2	6	3	1	4	9
4	3	1	9	7	5	8	2	6
2	6	9	1	4	8	7	5	3
3	1	4	6	8	9	5	7	2
9	5	8	7	2	4	6	3	1
6	7	2	5	3	1	9	8	4
5	2	7	3	9	6	4	1	8
1	4	6	8	5	2	3	9	7
8	9	3	4	1	7	2	6	5